प्रस्तुतकर्ता

सन्तोष कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर – संस्कृत

राजकीय महाविद्यालय जक्खिनी वाराणसी

विषय- संस्कृत

बी.ए. - प्रथम सेमेस्टर (मेजर)

इकाई –1/(1)

शीर्षक - **संस्कृत वांङ्गमय में पारंपरिक ज्ञान विज्ञान-**

उपशीर्षक- **वैदिक वांङ्गमय एवं भारतीय दर्शन**

स्वघोषणा

(disclaimer/ self-Declaration)

यह सामग्री विशेष रुप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है। आर्थिक /वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णता प्रतिबंधित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करेंगे और इसका प्रयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगे। इस कंटेंट में जो जानकारी दी गई है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

" The content is exclusively meant for academic purpose and for enhancing teaching and learning. Any other used for economic / commercial purpose is strictly prohibited the users of the content shall not distribute, disseminate or share it with anyone else and its use is restricted and advancement of individual knowledge. The information provided in this e-content is authentic and best as per my knowledge."

वैदिक वांङ्गमय एवं भारतीय दर्शन

भारत के प्राचीन ज्ञान विज्ञान का मूल स्रोत वेदों को माना जाता है। शब्द रचना की दृष्टि से वेद शब्द ज्ञानार्थक है जिसका हमारे ऋषियों महर्षियों ने अपनी तपस्या द्वारा साक्षात्कार किया है। वेदों को श्रुति भी कहते हैं।इनकी संख्या 4 है -ऋग्वेद ,सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद । वेदों को अपौरुषेय तथा ईश्वर की वाणी माना जाता है।

ऋग्वेद

ऋग्वेद संहिता में ऋचाओं का संग्रह है । 'ऋचा' उसे कहते हैं, जिसके द्वारा देवताओं की स्तुति की जाती है । अथवा चरण एवं अर्थों से युक्त वृत्तबद्ध मन्त्रों को ऋचा कहते हैं-" *पादेनार्थेन चोपेता वृत्तबद्धा मन्त्राः*"।[1] इनकी ऋचाओं के माध्यम से विभिन्न विधि विधान कार्य आज भी संपादित किए जाते हैं ।10,580 ऋचाओं से युक्त इस वेद मे देवताओं के गुणों का विस्तार से वर्णन मिलता है ।

ऋग्वेद में पृथ्वी गोलाकार आकृति की मानी जाती है।[2]*ऋग्वेद यह भी बताता है कि पृथ्वी मुक्त रूप से वायुमंडल में लटकी हुई है।*[3] *सूर्य को दिन तथा रात्रि, प्रातः तथा सायं ,मास वर्ष तथा ऋतु का नियामक माना जाता है।*[4]

यजुर्वेद

यजुर्वेद संहिता, यजुसों का संग्रह है । यजुस का अर्थ होता है -जिसमें अक्षरों की संख्या नियत न हो "अनियताक्षरावसानो यजुः ।" इसके अलावा "गद्यात्मको यजुः " एवं "शेषे यजुः शब्दः" /[5] का भी तात्पर्य यही है कि ऋक् और साम से भिन्न गद्यात्मक मन्त्रों का अभिधान चजुस् है । यजुर्वेद संहिता के मुख्य देवता वायु हैं । *यजुर्वेद का मुख्य विषय याज्ञिक विधि या कर्मकांड है।*[6] यजुर्वेद में कहा गया है कि प्रजा का कर्तव्य है राष्ट्र की रक्षा करे।[7]

सामवेद

साम शब्द का शाब्दिक अर्थ है देवों को प्रसन्न करने वाला गान। जब ऋग्वेद की ऋचाएं स्वरों से मिलती हैं तब साम बनता है । सामवेद में अलौकिक

देवताओं की उपासना में गाए जाने वाले 1975 मंत्र है । *सहस्रवर्त्मा सामवेदाः।*[8] अर्थात सामवेद की हजारों शाखाएं हैं

अथर्ववेद

अथर्ववेद में गुण धर्म आरोग्य जादू टोना के साथ-साथ यज्ञ के लिए मंत्र है वेद के इन प्राचीन भागों को संहिता भी कहा गया है । *अथर्ववेद को ब्रह्मदेव भी कहा जाता है।*[9]

सुनकर और अच्छी तरह समझ कर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचने के कारण इसे श्रुति भी कहा जाता है। श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार सबसे पहले अग्नि वायु आदित्य और अंगिरा ऋषि यों को वेदों का ज्ञान प्राप्त हुआ इसके बाद यह ज्ञान सप्तर्षियों तक पहुंचा ।संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है इसमें वैदिक काल से ही भारतीय संस्कृति ज्ञान विज्ञान की अजस्र धारा अक्षुण्ण रूप से प्रवाहित होती रही है । यह भाषा नैतिक मूल्य के प्रमुख आधार रही है जिसमें वेद वेदांग दर्शन धर्मशास्त्र आदि के साथ-साथ वैज्ञानिक विषयों पर चिंतन शामिल रहा है मानव कल्याण के लिए आज भी नितांत उपयोगी है भारतीय विद्वानों , ऋषियों मनीषियों ने समस्त ज्ञान-विज्ञान का विवेचन प्राणि मात्र के जीवन को संतुलित एवं संपूर्ण विकास के लिए किया जो संस्कृत वांङ्गमय में सुरक्षित है जिसके अनुशीलन एवं अध्ययन से मनुष्य इस लोक परलोक के लक्ष्य को प्राप्त कर

सकता है यह वैज्ञानिक चिंतन भौतिक समृद्धि के साथ-साथ आध्यात्मिक समृद्धि को भी इंगित करता है जो संहिता,ब्रह्मण,अरण्यक, उपनिषद मे निबद्ध है।

भारतीय दर्शन

वस्तुतः जीवन के प्रति मनुष्य का दृष्टिकोण ही दर्शन है जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग-अलग हुआ करता है भारतीय दर्शन प्रायः सभी दुःख निवृत्ति के लिए ही उपायों के अन्वेषण में लगे हुए हैं । सांसारिक दुखों के बंधन एवं उनकी निवृत्ति को दार्शनिक भाषा में मोक्ष के नाम से जाना जाता है । कुल 9 दर्शन माने जाते हैं जो आस्तिक और नास्तिक रूप से दो भागों में विभक्त हैं। आस्तिक में 6 दर्शन माने जाते हैं सांख्य दर्शन के प्रवर्तक आचार्य कपिल हैं, योग दर्शन के प्रवर्तक महर्षि पतंजलि, न्याय दर्शन के प्रवर्तक महर्षि गौतम को माना जाता है। वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक कणाद हैं, मीमांसा दर्शन के प्रवर्तक जैमिनी और वेदांत दर्शन के प्रवर्तक बादरायण हैं। तीन नास्तिक दर्शन चार्वाक दर्शन जिसके प्रणेता आचार्य बृहस्पति जैन दर्शन के प्रमुख महावीर स्वामी बौद्ध दर्शन के संस्थापक गौतम बुद्ध माने जाते हैं। बंधन और मोक्ष भारतीय दर्शनों का मुख्य विषय रहा है मोक्ष की सत्ता के संबंध में दर्शनों के अलग-अलग विचार मत है।

संदर्भ सूची

1. जैमिनी न्याय सूत्र

2 ऋग्वेद- 1/33/8

3-ऋग्वेद-4/53/3

4ऋग्वेद-1/95/3

5-जै. सू. //2/1/37//

6- संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास राधावल्लभ त्रिपाठी पृष्ठ 28

7- यजुर्वेद(9/23)

8- महाभाष्य महर्षि पतंजलि।

9 अथर्ववेद -15/5/6